विचार बिन्दु

चिंता से चित्त को संताप और आत्मा को दुर्बलता प्राप्त होती है, इसलिए चिंता को तो छोड़ ही देना चाहिए। -ऋग्वेद

खतरे में है नदियों का अस्तित्व

देश में वर्तमान में 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश हैं। इन सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आपको अलग-अलग नदियों का प्रवाह देखने को मिल जाएगा। नदियां एक तरफ जहां पीने के पानी और कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं, वहीं ये जैव विविधता को बनाए रखने में भी मदद करती हैं। जीवनदायी नदियों के बारे में समय समय पर जो सूचनाएं मिलती है वे हमारे लिए हितकर नहीं है। कहीं पर्याप्त वर्षा न होने से नदियां सूखती जा रही है तो कहीं मानव जनित कारणों से नदिया बर्बाद हो रही है। नदियों का सही रख रखाव नहीं होने और दुनियाभर की गंदगी, कूड़ा करकट प्रवाहित करने से नदियों की स्थिति निश्चय ही बेहद चिंताजनक है। केंद्रीय जल आयोग द्वारा हाल ही जारी आंकड़ों के विश्लेषण के बाद यह बात सामने आई है कि महानदी और पेन्नार के बीच पूर्व की ओर बहने वाली कम से कम 13 नदियों में इस समय पानी नहीं है। इनमें रुशिकुल्या, बाहुदा, वंशधारा, नागावली, सारदा, वराह, तांडव, एलुरु, गुंडलकम्मा, तम्मिलेरु, मुसी, पलेरु और मुनेरु शामिल हैं। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और ओडिशा राज्यों के 86,643 वर्ग किलोमीटर (वर्ग किमी) क्षेत्र से बहती हुई नदियाँ सीधे बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। इस बेसिन में कृषि भूमि कुल क्षेत्रफल का लगभग 60 प्रतिशत है और गर्मी के चरम से पहले ही यह स्थिति चिंताजनक है।

संयुक्त बेसिन में महत्वपूर्ण शहर विशाखापत्तनम, विजयनगरम, पूर्वी गोदावरी, पश्चिम गोदावरी, श्रीकाकुलम और काकीनाडा शामिल हैं। जारी आंकड़ों के मुताबिक, इस साल बेसिन में भंडारण में लगातार गिरावट आ रही है। भारत में नदी प्रणालियां सिंचाई, पीने और घरेलू खपत के लिए पानी के साथ-साथ सस्ते परिवहन और बिजली भी उपलब्ध कराती हैं। नदी घाटियों में पानी की कमी उन क्षेत्रों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आजीविका और कृषि गतिविधियों को गंभीर रूप से असर डालती है, खासकर वो जो जल आपूर्ति के लिए नदियों पर निर्भर हैं। नदियाँ हमारे जीवन में प्राचीन काल से ही उपयोगी रही हैं। ये हमारी संस्कृति की पहचान और जीवन का आधार हैं। सदियों से नदियाँ आगमन तथा व्यापार का सुगम माध्यम रही हैं। आज के समय में भी नदियों की उपयोगिता कम नहीं हुई है। इनका जल पीने और सिंचाई के काम में आता है। अनगिनत जीव जंतु इनसे जीवन पाते हैं।

एक वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में हर दिन 20 लाख टन सीवेज, औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट पानी में छोडे जाते हैं। यह 6.8 अरब लोगों की पूरी मानव आबादी के वजन के बराबर है। इसलिए अब समय आ गया है कि हम मानवता की भलाई के लिए अपनी नदियों को बचाएं। यह दिन नदियों के प्रबंधन, प्रदूषण और संरक्षण से जुडे मुद्दों को हल करने से संबंधित है। इस साल की थीम सभी के लिए जल पर केंद्रित है। यह एक ऐसा दिन है जो पानी के हमारे जीवनदायी स्त्रोत को बचाने जश्न मनाने और अपने आसपास के लोगों को जागरूक करने के लिए समर्पित है। यदि नदियों को आर्थिक उद्देश्यों के लिए संरक्षित और उपयोग करना है, तो एकजुटता महत्वपूर्ण है और लोगों को सीमाओं के पार नदी प्रबंधन के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

देश में मानव सभ्यता के विकास में नदियों का बड़ा योगदान है। कमोबेश सभी सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। हाल के वर्षों में जलस्त्रोतों पर संकट बढ़ा है । पहले जलाशयों पर ही संकट थे, लेकिन अब नदियाँ भी सुरक्षित नहीं रहीं। देखभाल नहीं होने के कारण कई नदियाँ तो सूखने के कगार पर पहुँच गई हैं। आदिकाल से जीवनदायिनी रही हमारी पवित्र नदियां आज खुद दम तोड़ रही हैं।

देश में मानव सभ्यता के विकास में नदियों का बड़ा योगदान है। कमोबेश सभी सभ्यताएँ नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। हाल के वर्षों में जलस्त्रोतों पर संकट बढ़ा है । पहले जलाशयों पर ही संकट थे, लेकिन अब नदियाँ भी सुरक्षित नहीं रहीं। देखभाल नहीं होने के कारण कई नदियाँ तो सूखने के कगार पर पहुँच गई हैं। आदिकाल से जीवनदायिनी रही हमारी पवित्र नदियां आज खुद दम तोड रही हैं। नदियों और झीलों के रूप में पानी के प्रचुर प्राकृतिक स्त्रोतों पर विचार करते हुए देखे तो भारत एक समृद्ध देश है। देश को नदियों की भूमि के रूप में उल्लेखित किया जा सकता है, भारत के लोग नदियों की पूजा देवी और देवताओं के रूप में करते हैं। लेकिन क्या विडंबना है कि नदियों के प्रति हमारा गहन सम्मान और श्रद्धा होने के बावजूद, हम उसकी पवित्रता, स्वच्छता और भौतिक कल्याण बनाए रखने में सक्षम नहीं हैं। हमारी मातृभूमि पर बहने वाली गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और कावेरी या कोई अन्य नदी हो, कोई भी प्रदूषण से मुक्त नहीं है। नदियों के प्रदूषण के कारण पर्यावरण में मनुष्यों, पशुओं, मछलियों और पक्षियों को प्रभावित करने वाली गंभीर जलजनित बीमारियाँ और स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं।

हमारी पवित्र नदियां आज कूड़ा घर बन जाने से कराह रही हैं, दम तोड रही हैं। गंगा, यमुना, घाघरा, बेतवा, सरयू, गोमती, काली, आमी, राप्ती, केन एवं मंदाकिनी आदि नदियों के सामने खुद का अस्तित्व बरकरार रखने की चिंता उत्पन्न हो गई है। बालू के नाम पर नदियों के तट पर कब्जा करके बैठे माफियाओं एवं उद्योगों ने नदियों की सुरम्यता को अशांत कर दिया है। प्रदूषण फैलाने और पर्यावरण को नष्ट करने वाले तत्वों को संरक्षण हासिल है। वे जलस्त्रोतों को पाट कर दिन-रात लूट के खेल में लगे हुए हैं। केंद्र ने भले ही उत्तर प्रदेश सरकार की सात हजार करोड़ रुपये की महत्वाकांक्षी परियोजना अपर गंगा केनाल एक्सप्रेस-वे पर जांच पूरी होने तक तत्काल रोक लगाने के आदेश दे दिए हों, लेकिन नदियों के साथ छेड़छाड़ और अपने स्वार्थों के लिए उन्हें समाप्त करने की साजिश निरंतर चल रही है। गंगा एक्सप्रेस-वे से लेकर गंगा नदी के इर्द-गिर्द रहने वाले 50 हजार से ज्यादा दुर्लभ पशु-पक्षियों के समाप्त हो जाने का ख़तरा भले ही केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय की पहल पर रुक गया हो, लेकिन समाप्त नहीं हुआ। गंगा और यमुना के मैदानी भागों में माफियाओं एवं सत्ताधीशों की मिलीभगत साफ दिखाई देती है। नदियों के मुहाने और पाट स्वार्थों की बलिवेदी पर नीलाम हो रहे हैं।

नदियाँ प्रकृति की दी हुई वे नियामत हैं, जो अपने आंचल में ढेर सारा पानी प्रवाहित कर करोड़ों जीवों की प्यास शांत करती हैं। किसानों को अन्न-जल से नवाजती हैं। अपनी इसी मातृ वत्सला वृत्ति के कारण नदियों को माँ स्वरुप सम्मान प्राप्त है, लेकिन विकास की अंधी हवस ने हमें माँ के प्रति अपने दायित्वों से विमुक्त कर दिया है। तभी आदि देव दिवाकर व भगवती गोदावरी की पुत्री सई नदी (जिसका जिक्र रामचरित मानस में भी किया गया है) काल कवलित हो रही है। कभी गंगा के समान पवित्र मानकर लोग इसके पानी का प्रयोग भोजन बनाने में करते थे। आज गंदी व प्रदूषण के कारण खाने की बात तो छोडिये लोग नहाने से भी डर रहे हैं।

-अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा,
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 6 अप्रेल, 2024

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, शतभिषा नक्षत्र दिन 3:39 तक, शुक्ल योग रात्रि 12:14 तक, तैतिल करण दिन 10:20 तक, चन्द्रमा आज कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज शनि प्रदोष व्रत, पंचक है। महावारुणी पर्व दिन 10:20 से दिन 3:39 पर रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:44 से 9:23 तक, चर 12:29 से 2:03 तक, लाभ-अमृत 2:03 से 5:09 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:16, सूर्यास्त 6:43

मेष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

धनु
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

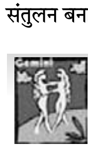

वृष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

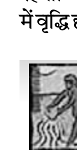

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

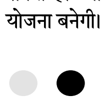

वृश्चिक
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित योजना बनेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड यात्रा के कुछ रोचक अनुभव

राजेन्द्र भाणावत

हम (मैं, पत्नी, उनकी बहन और बहन के पति) हाल ही ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की 20 दिवसीय यात्रा पूरी करके लौटे हैं। न्यूजीलैंड में 12 और ऑस्ट्रेलिया में 6 दिन बिताए। न्यूजीलैंड की जनसंख्या 51 लाख और ऑस्ट्रेलिया की 2.60 करोड़ है।

इस यात्रा की विशेष बात यह थी कि हमने न्यूजीलैंड में एक एस.यू.वी. कार किराए पर लेकर उसे स्वयं चलाया। इससे न केवल वहां के कई दूरस्थ स्थानों को देखने का अवसर मिला अपितु स्थानीय लोगों से मिलने का भी अच्छा अवसर मिला। सामान्यतया हम किसी कंपनी के पैकेज के अंतर्गत ग्रुप -टूर पर जाया करते थे जिसमें वहां के जीवन और व्यवस्थाओं को नजदीक से देखने का अवसर कम मिलता था। इस दौरान जो अनुभव हमें हुए उनमें से कुछ का उल्लेख यहाँ किया गया है जो शायद पाठकों को रोचक लगे।

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर में एयरपोर्ट के बाहर जब हम टैक्सी में सामान रखकर होटल की ओर रवाना हुए और होटल पहुंचे तब सामान उतारते समय पता चला कि हमारा एक बैग वहीं सामान रखते समय एयरपोर्ट के बाहर ही छूट गया था। होटल, एयरपोर्ट से 25 किलोमीटर दूर था, अत: वहाँ महंगी टैक्सी करके जाना उचित नहीं लगा क्योंकि हमें आधा घंटे बाद ही फिलिप आइलैंड के पूर्व निर्धारित भ्रमण के लिए रवाना होना था। वैसे भी सड़क पर छूटे हुए बैग के मिलने की संभावना नगण्य थी। इस बैग में महत्वपूर्ण क्रेडिट कार्ड, ऑस्ट्रेलिया की करेंसी, मोबाइल फोन आदि अन्य महत्वपूर्ण सामान था एवं इसका मिलना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था। हमारी परेशानी को देखते हुए हमारी टैक्सी के ड्राइवर ने एक टेलीफोन नंबर दिया जो कि मेलबॉर्न एयरपोर्ट के "लॉस्ट एंड फाउंड डिपार्टमेंट" का था। हमने इस नंबर पर फोन किया तो पहली बार में फोन उठा लिया गया। जो महिला फोन पर बात कर रही थी, उसे हमने अपने खोए हुए बैग के बारे में बताया। उसने टेलीफोन पर ही उस बैग के रंग एवं अन्य पहचान की जानकारी हमसे ली। जानकारी प्राप्त करते ही उसने टेलीफोन पर हमें सूचित किया कि हमारा बैग उनके विभाग में पहुंच चुका है एवं कभी भी उसे सुबह 9 बजे से अपराह्न 5 बजे के बीच प्राप्त कर सकते हैं। यह जानकर हमने राहत की सांस ली। अब प्रश्न बैग प्राप्त करने का था। क्योंकि हमें दो दिन बाद ही इस एयरपोर्ट से दिल्ली के लिए प्रस्थान करना था, हमने यह उचित समझा कि एयरपोर्ट पर निर्धारित समय से एक घंटा पहले पहुंचकर हम बैग ले लें। इस कार्यालय के पते की जानकारी हमने पहले ही प्राप्त कर ली थी। जहां यह कार्यालय स्थित है और जहां से हमारी उड़ान को जाना था वह दोनों टर्मिनल अलग-अलग थे। एयरपोर्ट पर पहुंचकर हमने ऑफिस में जाकर संपर्क किया तो उन्होंने केवल हमसे आइडेंटिटी पूछी। पहचान पत्र देखने के बाद उन्होंने बिना किसी प्रकार की औपचारिकता के, हमें अपना बैग सौंप दिया। बैग में सारी वस्तुएं यथावत रखी हुई थीं। जिस महिला ने हमें यह बैग लौटाया उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि हमें उनके देश में बैग खोने के कारण असुविधा हुई एवं हमें चॉकलेट खाने के लिए दी। शायद इसी प्रकार के मित्रवत व्यवहार के कारण ही मेलबॉर्न को, वर्षों तक, रहने के लिए विश्व का श्रेष्ठतम शहर माना जाता रहा है। यह उल्लेखनीय है कि एयरपोर्ट से रवाना होने के आधा घंटे के अंदर ही हमारा खोया हुआ बैग लॉस्ट एंड फाउंड डिपार्टमेंट में सही स्थान पर जमा हो चुका था। यह मैं पाठकों की कल्पना पर छोड़ता हूं कि क्या इस प्रकार की स्थिति हमारे यहां पर सोची जा सकती है?

ऑस्ट्रेलिया के शहर केयर्न में हमें दो दिन रुकना था और हमारी उड़ान वहां पर दिन में 1:30 बजे पहुंचने वाली थी। सिडनी से केयर्न की उड़ान निरस्त होने के कारण हमें पहले सिडनी से मेलबोर्न जाना पड़ा और फिर मेलबर्न से केयर्न की फ्लाइट लेनी पड़ी। इस कारण हम केयर्न लगभग रात को 11:30 बजे पहुंचने वाले थे। होटल में बुकिंग के समय हमें यह सूचित किया गया था कि होटल पहुंचने में निर्धारित समय से विलंब होने पर उन्हें सूचित करें। यह सोचकर, हमने जब 8:00 बजे के आसपास फोन किया तो हमें यह बताया गया कि 9:00 बजे बाद होटल का रिसेप्शन बंद हो जाता है होटल का मेन गेट भी बंद हो जाता है। हमें यह भी बताया गया कि होटल के मेन गेट के बाहर ही एक लॉकर लगा हुआ है। उसका पासवर्ड हमें उन्होंने ईमेल के द्वारा भेजा और कहा कि हम उसके आधार पर लॉकर वाले डिब्बे को खोल लें, जिसमें हमारे दोनों कमरों की कार्ड वाली चाबियां रखी हैं। हम रात को जब 11:30 बजे होटल पहुंचे तो वही हुआ। हमने दिए गए पासवर्ड को काम में लेते हुए उसे खोला और उसमें हमारे दोनों कमरों की चाबियां सुरक्षित रखी हुई थीं। हमने उनकी चाबियां से मेन गेट और अपने कमरे खोले।

हमें यह बड़ा आश्चर्यजनक लगा कि बिना किसी कर्मचारी के, किस प्रकार व्यवस्थित रूप से कोई भी यात्री सुविधा पूर्वक होटल में अपने कमरे तक पहुंच सकता है।

इन दोनों ही देशों की अधिकांश व्यवस्था के मूल में विश्वास की भावना है। इस होटल से दो दिन बाद प्रात: 5:00 बजे ही निकलना था और होटल का रिसेप्शन 7:00 बजे खुलता है, अत:, उसके लिए भी हमें वही प्रक्रिया पुन: अपनानी पड़ी और अपने कमरे बंद करके होटल की चाबी वाले कार्ड उसी प्रकार, मेन गेट के बाहर के डिब्बे में रख दिये। इस प्रकार होटल में जाते समय एवं छोड़ते समय हमें किसी प्रकार के स्टाफ से संपर्क करने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी और उसके बावजूद हमें किसी प्रकार की कोई परेशानी भी नहीं हुई। यही वह बातें हैं जो किसी भी पर्यटक के लिए अच्छी यादें छोड़ता है।

हमारी यात्रा का प्रारंभ में हमें दिल्ली से सिडनी होते हुए ऑकलैंड पहुंचना था। दिल्ली से सिडनी की उड़ान एयर इंडिया से थी और सिडनी से ऑकलैंड की उड़ान लगभग डेढ़ घंटे बाद ऑस्ट्रेलिया एयरलाइन क्वांटम एयरवेज की थी। दिल्ली से हमारी उड़ान आधा घंटा विलंब से चली, जिसके कारण सिडनी में फ्लाइट बदलने का समय केवल एक घंटा ही बचा था। एयरपोर्ट काफी बड़ा है हमें आशंका थी कि हम अपनी अगली फ्लाइट ले पाएंगे अथवा नहीं। हम तो अपने अगली फ्लाइट लेकर के ऑकलैंड निर्धारित समय पर पहुंच गए, किंतु हमारा सामान जो कि सीधे दिल्ली से ऑकलैंड के लिए बुक कराया गया था, वह हमारे साथ नहीं पहुंच पाया। हमारे पास केवल हैंडबैग बच्चे थे और सारा चेक इन सामान हमारे साथ नहीं था। इस हेतु हमने 'मिसिंग प्रॉपर्टी' की रिपोर्ट क्वांटम एयरवेज के एजेंट के काउंटर पर ही दर्ज करा दी। जिनमें हमारी यात्रा का सारा सामान था। क्योंकि हम भी शुद्ध रूप से शाकाहारी हैं, 'रेडी-टू-ईट' की खाद्य सामग्री भी उसी में रखी हुई थी। हमारे पास कोई विकल्प नहीं था क्योंकि अगले ही दिन हमें अपनी आगे की यात्रा प्रारंभ करना थी। हमने जिस काउंटर पर अपनी शिकायत दर्ज कराई थी, उन्हें बता दिया था कि हम दो-तीन दिन बाद किस होटल में रुकने वाले हैं। उन्होंने कोई निश्चित तिथि नहीं बताई किंतु यह कहा कि जैसे ही सामान आएगा हम आपको सूचित कर देंगे। हमने अपना दूरभाष नंबर उनके पास छोड़ दिया था।

इस प्रकार हमारी यात्रा का प्रारंभ बिना सामान के हुआ। कुछ अति आवश्यक कपड़े और सामग्री हमने ऑकलैंड से खरीद ली। लगभग चार दिन बाद, वेलिंगटन पहुंचने पर हमें सूचना मिली कि हमारा सारा सामान पहुंच चुका है और वे इसे होटल में पहुंचा देंगे। शाम को जब हम होटल पहुंचे तो हमें पूरा सामान होटल की लॉबी में यथावत मिल गया। एक ओर जहां प्रत्येक पर्यटक का न्यूज़ीलैंड एयरपोर्ट पर अधिकांशत: सामान, विशेषकर खाद्य सामग्री को खोल कर जांच की जाती है, वहीं हमारे सामान को खोला तक नहीं था। उल्लेखनीय है कि न्यूजीलैंड में बाहर से किसी प्रकार के बीज़, खुला खाने का सामान, दवाइयाँ लाने पर कड़ा प्रतिबंध है। हमें खाने की पूरी सामग्री भी यथावत प्राप्त हो गयी। हमारे यहां सामान आ भी जाए, तो अपेक्षा यही की जाती है कि आप स्वयं एयरपोर्ट जाकर उसे प्राप्त करें।

ऑटोमेशन का एक और अच्छा उदाहरण मेलबर्न हवाई अड्डे पर देखने को मिला। मेलबोर्न से केयर्न की फ्लाइट में हम चार लोगों का कुल चेक इन बैगेज 60 किलो का हो सकता था। सामान्यत: एक-एक बैग रखकर वजन लेते हैं और कई बार अधिक वजन के बारे में अनावश्यक विवाद भी चेक-इन काउंटर पर होता है। मेलबर्न में यह सारी व्यवस्था स्वचालित थी। आप बेल्ट पर एक-एक कर अपनी अटैची रखते जाएं तो उस पर स्पष्ट रूप से डिस्प्ले आ जाता है कि कितना और बैलेंस वजन आप रख सकते हैं। उदाहरण के लिए एक अटैची रखी और 16 किलो की थी तो शेष 44 किलो है, यह लिखा आ जाता है। जैसे ही आपके सामान का वजन 60 से थोड़ा भी ऊपर होता है, वह बेल्ट चलना बंद हो जाता है। आपके लिए आवश्यक हो जाता है कि अपने सामान का वजन कम करें। इस स्वचालित व्यवस्था से बहुत सुविधा भी हुई और अनावश्यक विवाद से भी बचा जा सका है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि, कहीं कोई गंदगी दिखाई नहीं देती। ढूंढने पर भी कचरा नहीं ढूंढ पाए। हमारे देश में स्वच्छता अभियान के बावजूद अधिकांश शहरों में कचरे के ढेर हर गली-मोहल्ले में अब भी देखे जाते हैं।

'साईनेज', यानी दिशा संकेत हर स्थान पर हैं और बहुत स्पष्ट। इस कारण आपको किसी से कुछ पूछने की आवश्यकता ही नही होती। न्यूज़ीलैंड में अपने वाहन से यात्रा करने वालों के लिए कहीं बैठकर खाना खाने या थोड़ी देर विश्राम करने हेतु 'हर्म्प्ह्ूा' अर्थात् पेड़ और बेंच की व्यवस्था हाई वेज़ पर की गई है। इस हेतु नीले रंग के दिशा संकेतक पहले से ही दिखाई दे जाते हैं।

सारे अच्छे अनुभवों के बीच एक अनुभव ऐसा भी हुआ जिसने यह सिद्ध किया कि कितना ही ऑटोमेशन हो जाए किंतु एक 'कॉमन सेंस' की आवश्यकता हमेशा रहती है। उदाहरण के लिए, हमने सभी हवाई टिकट बुक करते समय यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया था कि हमें विशुद्ध रूप से शाकाहारी भोजन ही उड़ान के दौरान दिया जाए। जब हम मेलबर्न से सिंगापुर की उड़ान लेने वाले थे तो वहां पर हमें काउंटर पर बताया गया कि हमारे लिए शाकाहारी भोजन की व्यवस्था संभव नहीं है क्योंकि उसका उल्लेख उनके पास उपलब्ध रिकॉर्ड में नहीं था। हम इस बात से परेशान थे कि पूरी फ्लाइट में बिना किसी प्रकार के शाकाहारी भोजन के घंटों तक बैठे रहना मुश्किल होगा। पर, जब हम हवाई जहाज में बैठे, तो वहां के स्टाफ ने सबसे पहले हमें आकर यह बताया कि हमारे लिए शाकाहारी भोजन की पर्याप्त व्यवस्था है। इसलिए स्पष्ट हुआ कि सब जगह समान जानकारी उपलब्ध नहीं थी जो कि बहुत सरलता से हो जानी चाहिए थी। ऑटोमेशन का अर्थ यह नहीं है कि हम कॉमन सेंस को ताक पर रख दें।

कुल मिलाकर हमें ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलैंड की यात्रा में अत्यंत ही यादगार अनुभव हुए जिनमें से कुछ को ही पाठकों के साथ साझा किया गया है।

-राजेन्द्र भाणावत,
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

पावटा से कुनेड़ तक 2.5 करोड़ की लागत से बनने वाली सड़क का काम अधूरा छोड़ा

ठेकेदार ने सड़क खोदकर उस पर मोरम डालकर छोड़ दिया, राहगीर परेशान होने लगे

पावटा, (निसं)। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में पावटा से कुनेड़ 2.5 करोड़ की की लागत से दो किमी. लंबी व 30 फीट चौड़ी सड़क प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत बननी थी है। इसकी टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद ठेकेदार ने इस पर करीब एक महिने देर से काम शुरु कर दिया था और लगभग सड़क निर्माण के तहत मोर्रम डालकर सी सी के लिए पक्का भी कर दिया गया है। मगर ठेकेदार ने इसके बाद कार्य आगे नहीं बढ़ाया, ठेकेदार ने सड़क खोदकर उस पर मोर्रम डालकर छोड़ दिया है। इससे राहगीर इस मोर्रम वाले रोड पर मजबूरीवश वाहन चलाने पर गिरकर घायल होने लगे हैं।

ग्रामीणों ने बताया कि मार्ग पर नुकीले पत्थर से प्रतिदिन राहगीर घायल हो रहे हैं, जबकि ग्राम से प्रतिदिन छात्र-छात्राएं पावटा पढ़ने जाते हैं। उनके वाहन पंचर होने के कारण समय पर स्कूल भी नहीं पहुंच पाते और पैदल गांव वापस आना पड़ता है। ग्रामीणों ने बताया कि इस मार्ग पर पैदल चलना भी दूभर हो गया और काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सड़क पर गड्ढों के साथ पत्थर निकले हुए हैं, जिससे आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। बाबा खाटू श्याम जाने वाले पद यात्रियों को भी इसी कंकड़ भरे नुकीले पत्थरों वाली सड़क से होकर गुजरना पड़ा था जिससे उन्हें काफी तकलीफों का सामना करना पड़ा था। रोड पर निकले इन नुकीले पत्थरों से राहगीरों के पैर चोटिल हो रहे हैं। इसी सड़क से लगभग एक दर्जन गांव के लोगों का आवागमन होता है।

ग्रामवासियों का कहना है कि शीघ्र इस सड़क का निर्माण पूरा कराया जाए, अन्यथा हम एकजुट होकर आंदोलन करेंगे। क्योंकि ठेकेदार द्वारा पहले से बनी हुई सड़क को खोदकर छोड़ दिया और उबड़-खाबड रास्ते के कारण उन्हें असुविधा हो रही है। बताया जा रहा है कि सड़क ठेकेदार द्वारा अपने राजनैतिक रसूख के चलते मनमानी बरती जा रही है। जिससे कई दुर्घटनाएं हो चुकी और भविष्य में भी दुर्घटना होने की संभावनाएं बनी हुई है। रात के समय मार्ग पर चलने वाले वाहन चालकों को काफी असुविधा का सामना करना पड़ता है। कई बार तो वाहन अनियंत्रित होकर नहर में कूद जाते हैं। वहीं अधूरी पड़ी खुदी सड़क के कारण कई वाहन क्षतिग्रस्त हो गए हैं लेकिन सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारी ध्यान नहीं दे रहे है। लोगों ने कई बार ठेकेदार के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की, लेकिन सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारी उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करते हैं, जिसके चलते ठेकेदार द्वारा सड़क कार्य में लापरवाही बरती जा रही है।

सड़क पर फैली गिट्टियों से आए दिन दुर्घटनाएं हो रही है।

▪ ग्रामीणों ने शीघ्र सड़क के अधुरे पड़े निर्माण कार्य को पूरा कराये जाने की मांग की

मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से स्वीप फूड कार्निवल का आयोजन

▪ शहर के आमजन ने बीकानेरी स्वाद का लुत्फ उठाने के साथ 19 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव में मतदान करने की शपथ ली

बीकानेर, (निसं)। आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मतदाताओं को मतदान के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से मसाला चौक में पहली बार स्वीप फूड कार्निवल आयोजित हुआ। कार्निवल में सबसे बड़ा मतदान समोसा, पनीर, कोफ्ता, संदेश, पापड़, घेवर, ब्रेड, गुलाब जामुन, सोहन पापड़ी, बंगाली मिठाईयां और केक विशेष आकर्षण के केंद्र रहे। इस दौरान शहर के आमजन ने बीकानेरी स्वाद का लुत्फ उठाने के साथ 19 अप्रैल को होने वाले लोकसभा चुनाव में मतदान करने की शपथ ली।

जिला निर्वाचन अधिकारी नम्रता वृष्णि के निर्देश पर नवाचार के तौर पर पहली बार यह आयोजन किया गया। इसमें बीकानेर को विशेष पहचान दिलाने वाले उद्यमियों द्वारा अनेक नवाचार किए गए। कार्निवल के दौरान मतदान के प्रति जागरूकता से जुड़ी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित हुई तथा विजेताओं को मौके पर ही पुरस्कार दिए गए। प्रतियोगिता के प्रति आमजन में उत्सुकता रही तथा उन्होंने बढ़-चढ़ कर चुनाव से संबंधित प्रश्नों के जवाब दिए। इस अवसर पर कच्छी घोड़ी, रोबीले राजस्थानी तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

संभागीय आयुक्त वंदना सिंघवी, पुलिस महानिरीक्षक ओमप्रकाश, जिला निर्वाचन अधिकारी नम्रता वृष्णि, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सोहनलाल, नगर विकास न्यास के सचिव मुकेश बारहठ तथा नगर निगम के आयुक्त अशोक असीजा ने कार्निवल का अवलोकन किया तथा चुनावी क्विज प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया। इस दौरान मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ मोहित सिंह तंवर, जिला उद्योग केंद्र की महाप्रबंधक मंजू नैन गोदारा, खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रवण कुमार वर्मा, स्वीप सह प्रभारी हरिशंकर आचार्य, गोपाल जोशी, मालकोश आचार्य आदि मौजूद रहे। कार्निवल में बड़ी संख्या में मौजूद आमजन ने मतदान शपथ के साथ हस्ताक्षर अभियान में भी भाग लिया। डिस्ट्रिक्ट आइकन पंकज सेवग ने मतदान का संदेश दिया। कार्यक्रम का संचालन संजय पुरोहित ने किया। मुन्ना सरकार, राज पुरोहित, सुनील रांकावत, कशिश आचार्य और यश पुरोहित ने मतदान से जुड़े गीतों की प्रस्तुति दी। केके रंगा ने मिमिक्री के माध्यम से मतदान की अपील की।